International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 1330-1336

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 1330-1336
www.allresearchjournal.com
Received: 12-04-2017
Accepted: 15-05-2017

डॉ. नीलम ऋषिकल्प
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, रामलाल आनंद महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Correspondence
डॉ. नीलम ऋषिकल्प
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, रामलाल आनंद महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

गांधी जी की सर्वोदय पत्रकारिता

डॉ. नीलम ऋषिकल्प

राष्ट्रपिता के रूप में ख्याति प्राप्त गाँधी जी विश्वविख्यात पत्रकार थे| कहना न होगा गाँधी जी ने पत्रकारिता को हथियार में के रूप जिस बखूबी प्रयोग किया उससे गान्धी जी के पत्रकार रूप की पहचान बनने में देर न लगी| गाँधी जी यह बात बहुत पहले ही समझ गए थे कि जनजागरण और राष्ट्रीयता के लिए पत्रकारिता बहुत महत्वपूर्ण कुंजी है| उन्होंने पत्रकारिता को कभी व्यवसाय नहीं माना, बल्कि जनता को संगठित करने का एक प्रभावशाली माध्यम बनाया और वे इसमें सफल भी हुए| गांधी जी ने अपनी पत्रकारिता की शुरुआत स्वतंत्र लेखन से ओर लन्दन से छपने वाले अखबारों से की| गाँधी जी के पत्रकारिता समय को विद्वानो ने पत्रकारिता का स्वर्णिम काल माना है गाँधी जी के पत्रकारिता से गहरे सरोकार थे स्वराज पाप्ति के लिए तो भारत में पत्रकारिता की शुरुआत गांधी जी से बहुत पहले हो गयी थी| राजा राममोहन राय, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, मदन मोहन मालवीय, स्वामी दया नन्द सरस्वती जैसे अनेकों राष्ट्रप्रेमी और समाज सुधारकों ने पत्र-पत्रिकाओं का महत्व जान लिया था | गाँधी जी के भारतीय राजनीति में आने से पहले उदन्त मार्तण्ड, बंगदूत, हिंदी प्रदीप, भारत मित्र, कवि वचन सुधा, हित वार्ता, बंगामित्र जैसे बहुत से महत्व पूर्ण पत्र निकल चुके थे जिन्होंने भारतीय मानस को इतने गहरे तक प्रभावित किया जिनके फलस्वरूप सारा भारतीय जनमानस राष्ट्र प्रेम के लिए उमड़ पड़ा, उन्हें समझ आ गया था उन्हें चाहिए केवल और केवल आज़ादी और आज़ादी अंग्रेजी सत्ता से|

गांधी जी 1888 में कानून की पढाई करने के लिए लन्दन गए वहां जाकर उन्होंने पहली बार 'टेलीग्राफ', 'डेली न्यूज' और 'पाल मोल गजट' जैसे अखबार पढ़े| यह गांधी जी के लिए नया अनुभव था| अपनी आत्म कथा में उन्होंने लिखा है| "भारत में तो मैंने अखबार पढ़े ही नहीं|" इससे स्पष्ट है की गांधीजी को विदेश जाने पर ही अखबारों की उपयोगिता और अनिवार्यता समझ में आई और उन्हें लगा कि अखबार केवल खबर ही नहीं अपितु अपने विचारों को भी लिखने और दूसरों तक पहुंचने और का एक सरल, श्रेष्ठ माध्यम भी है|

गाँधी जी लन्दन में जब छात्र बनकर रह रहे थे तभी उन्होंने वहाँ के पत्र 'वेजिटेरियन' में नो लेख लिखे जिनमें भारत का रहन, सहन, खान पान, त्यौहार, रीति रिवाज और उत्सवों पर लिखकर विश्व को भारतीय संसकृति से परिचित कराया| उनहोंने अपने लेखों में कभी झूठ कुछ भी नहीं लिखा न कुछ छुपाया, बल्कि गांधी जी ने तो इन पत्रों में विश्व के सामने यह भी उजागर किया की भारतीय मांसाहारी भी होते हैं| इसके बाद गाँधी जी जब वे 1896 में दक्षिण अफ़्रीका गए तो वहां रंगभेद की नीतियों को देखकर उनका मन बहुत आहत हुआ| उनहोंने वहाँ से भारत लौटकर 'टाइम्स ओंफ इण्डिया' में लिखा कि अखबारों द्वारा प्रचार ही हमारी हालत सुधारने का सबसे अच्छा तरीका है| इसे उन्होंने और स्पष्ट करते हुए अपनी पुस्तक सत्याग्रह में लिखा है ''मेरा ख्याल है की ऐसी कोई भी लड़ाई जिसका आधार आत्मबल हो, अखबार के बिना नहीं चलाई जा सकती| अगर मैंने अखबार निकालकर दक्षिण अफ्रीका में बसी हुई भारतीय जमात को उसकी स्थिति न समझाई होती ओर सारी दुनियां में फैले हुए भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ क्या कुछ हो रहा है, इसे 'इन्डियन ओपिनियन' के सहारे लोगो अवगत न रखा होता तो मै अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकता था| इस तरह मेरा भरोसा और पक्का हो गया कि अहिंसक उपायों से ही सत्य की विजय के लिए अखबार एक महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य साधन है| ''

दक्षिण अफ़्रीका में रहते हुए ही उन्होंने भारतीयों के साथ होनेवाले भेदभावों और अत्याचारों के बारे में भारत से प्रकाशित 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'हिंदू', 'अमृत बाज़ार पत्रिका', 'स्टेट्समैन' आदि समाचार पत्रों के लिए लेख लिखे। ये वही दौर था जब अफ़्रीका में रंगभेद के ज़ुल्म की कहानियां पूरी दुनिया सुन रही थी। गाँधी ने ऐसे में अपनी वकालत के ज़रिये भी उन्हें उनका हक़ दिलाने की भी कोशिश की। 1903 जब गांधी ने अफ्रीका में ही 'इन्डियन ओपिनियन' का प्रकाशन शुरु करवाया उस समय में जिन विषयों पर दूसरे अख़बार लिखने से घबराते थे, गांधी जी ने निर्भीक होकर इस अख़बार को पांच भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किया| यहीं से गांधी जी की सर्वोदय पत्रकारिता की शुरुआत होती है यह इस बात से प्रमाणित होता है कि से उन्हें दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए केवल भारतीयों की ही चिंता नहीं थी अपितु सारी मानव जाति की चिंता थी| 1903 में 'इन्डियन ओपिनियन' पत्र की नीति के बारे में बताते हुए लिखा -* 'पत्र की नीति इस उपमहाद्वीप में भारतीयों के हित को संसार के सामने उपस्थित करना है | किन्तु हम कह देना चाहते हैं की पत्र केवल भारतीय समाज के अधिकारों की बात नहीं करेगा, वह एक बड़े और विशाल साम्राज्य में उसके क्या कर्तव्य हैं, यह बताने में कभी किसी प्रकार की आनाकानी नहीं करेगा | पत्र इस बात की पूरी पूरी कोशिश करेगा की नियति ने जब दो महान जातियों को एक झंडे के नीचे खडा कर ही दिया है तो वे एक दूसरे के हित और सम्मान की रक्षा करते हुए अपना अपना विकास इस तरह करें की सारी मानवजाति लाभान्वित हो सकें|"

यही समय था जब गाँधी जी पत्रकार के रूप में पूरी तरह पूरी तरह स्थापित हो चुके थे। गांधी जी को सत्ता के प्रति विरोधी सुरों के कारण 1906 में अफ्रीका में जोहान्सवर्ग की जेल में बंद कर दिया। लेकिन जेल में रहने के बावजूद भी गांधी जी ने सच के साथ समझौता नहीं किया, बल्कि जेल से ही अख़बार के संपादन का काम किया। यहीं से शुरु हुआ गांधी जी का पत्रकारिता का सफ़र जो उनके बाद भी 'सर्वोदय' पत्रकारिता के रूप में गांधी जी के बाद भी चलता रहा|

गाँधी में जनता की नब्ज़ पहचानने की अद्भुत क्षमता थी और वह उनकी भावनाओं को समझने में देर न लगाते थे। दक्षिण अफ़्रीका के अनुभवों ने

और सत्याग्रह के उनके प्रयोगों ने ही उन्हें 'इंडियन ओपिनियन' नामक पत्र के सम्पादन की प्रेरणा दी। 4 जून 1906 को चार भाषाओं में इसका प्रकाशन शुरू किया गया, जिसके एक ही अंक में हिंदी, अंग्रेज़ी, गुजराती और तमिल भाषा में छह कॉलम प्रकाशित होते थे। अफ़्रीका तथा अन्य देशों में बसे प्रवासी भारतीयों को अपने अधिकारों के प्रति सजग करने तथा सामाजिक-राजनैतिक चेतना जागृत करने में यह पत्रिका बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई। महात्मा गाँधी दस वर्षों तक इससे जुड़े रहे। 'इंडियन ओपिनियन' का उद्देश्य था दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों को स्वतंत्र जीवन का महत्व समझाना। इसी के द्वारा उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का प्रचार भी प्रारम्भ कर दिया था | गांधी जी के लिए पत्रकारिता एक ऐसा हथियार थी जो आजादी की लड़ाई का बहुत बड़ा साधन बनी | जन समस्याएँ ढूँढना और उन समस्याओं' के प्रकाशित होने वाले लेखों ने जन जागरण का काम किया। समस्या और घटना चाहे उड़ीसा की हो या तमिलनाडु की, आंध्र प्रदेश की हो या मलय देश की, उत्तर प्रदेश की हो या मध्यप्रदेश की गाँधी उन समस्याओं और घटनाओं को न सिर्फ़ अपने साप्ताहिक पत्र में लिखते थे बल्कि उन पर अपना मत भी देते थे। कई बार उनके मत लोक जीवन के परंपरागत मत से मेल नहीं खाते थे, फिर भी अपने उस मत को व्यक्त करने का ख़तरा उठाते थे।गांधी जी 'यंग इंडिया', 'नव जीवन' और 'हिन्दी नवजीवन' तीन प्रमुख पत्रों का सम्पादन किया इन पत्रों में गांधी जी सम्पादकीय टिप्पणियों के अनुवाद ओर गुजराती, हिन्दी में भी लिखते थे |1932 में असहयोग आन्दोलन के कारण गांधी जी को जेल हो गयी | वे इन पत्रों का सम्पादन और मार्गदर्शन जेल से ही करते रहे | इन्हीं दिनों कुछ अछूत कहे जाने वाले लोगों के विद्रोह के स्वर गांधी जी तक पहुंचे तो एक अछूत व्यक्ति द्वारा अछूत के लिए ' हरिजन' नाम सुझाया जो गांधी जी ने सहज स्वीकार किया और अपने तीनो पत्रों का नाम बदलकर उनहोंने 'हरिजन' कर दिया और अब यह पत्र अंग्रजी में 'हरिजन' गुजराती में 'हरिजन बंधु' ओर हिन्दी में 'हरिजन सेवक' के नाम से निकलने लगा |

गाँधी जी का अब तक पत्रकारिता से अच्छा और लंबा अनुभव और सम्बन्ध बन चुका था | उन्होंने यह भी अच्छी तरह समझ लिया था की भारतीय जनमानस अब पूरी तरह स्वराज पाने के किए करो या मरो के लिए भी तैयार है | गाँधी जी की यही अपनी ताकत थी की वह आधुनिक विचारधारा से प्रभावित होकर भी अपनी जड़ो से गहराई से जुड़े रहे | वह जानते थे की भूखे राष्ट्र का कोई धर्म नही हो सकता न ही बल और न संगठन | पहले उनकी आवश्यकताए पूरी हो |गांधी जी इस सब का समाधान पत्रकारिता में खोज निकाला | यहां गांधी जी एडिसन की पत्रकारिता के विषय में सोच से सहमत दिखाई देते हैं –" एडीसन के कथन '' पत्रकारिता कला से अधिक मनोरंजक, अधिक विमोहक, अधिक रसमयी, अधिक सर्वतोमुखी कोई दूसरी बात मुझे दिखाई नहीं देती एक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन सहस्रों नर – नारियों तक पहुंचना, उनसे अपने मन की बात कहना, उन्हें सलाह देना, वे क्या करे क्या न करें, इस सम्बन्ध में परामर्श देना, उनका शिक्षण और मनोरंजन करना तथा आवश्यक हो तो उन्हें चिढ़ा भी देना, कैसा आश्चर्यजनक होता होगा |यह सोचकर में स्पन्दित हो उठाता हूँ |" गांधी जी के लिए भी पत्रकारिता एक अहिंसात्मक हथियार ओर सामजिक सेवा का बहुत बड़ा उपक्रम था |* 2जुलाई 1925 में उन्होंने यंग इण्डिया में लिखा " मैंने पत्रकारिता को केवल पत्रकारिता के प्रयोजन के लिए नहीं बल्कि इसे मैंने जीवन में अपना जो मिशन बनाया है उसके केवल एक साधन के रूप में रूप में अपनाया है| मेरा मिशन है उदाहरण द्वारा सिखलाना और कट्टर

संयम में रहते हुए सत्याग्रह के अद्वितीय हथियार का इस्तेमाल पेश करना जो अहिंसा का सीधा परिणाम है |"

गांधी जी जब तक पूरी तह राजनीति के केंद्र में आए तब तक भारत के सारे व्यापार ब्रिटिश सत्ता के हाथ में चले गए थे]बेरोजगारी, भूख, कानून और जेल में डाले जाने के डर से डरी हुई जनता को गांधी जी ने विशवास दिलाया और घोषणा की – 'में उस हिन्दुस्तान के लिए काम करूंगा, जिसमें गरीब से गरीब भी यह अनुभव करेगा की यह उसका देश है और उसके निर्माण में उसकी अपनी कारगर आवाज है – ऐसा हिंदुस्तान जिसमें सारी जातियां आपसी मेल के साथ रहेंगी'] ब्रिटिश सत्ता से छुटकारा दिलाने में गांधी जी की ताकतपर सभी को भरोसा होने लगा | नेहरू जी ने तो गांधी जी को मुक्ति का दाता मान लिया था और अपनी आत्म कथा में लिखा " गांधी जी ताजी हवा के उस प्रबल झोंके की तरह थे, जिसने हमारे लिए पूरी तरह फैलना और गहरी साँस लेना संभव बनाया – वह उस बबंडर की तरह थे| जिसमें बहुत से लोगों विशेषकर मजदूरों के विचारों को उलट पुलट दिया|" गांधीजी के लिए' 'पत्रकारिता व्यवसाय नही अपितु सेवा है' सेवा करने वाला व्यक्ति कुछ भी अनदेखा नही करता उसके लिए समाज में सभी बराबर है कोई छोटा या बड़ी नही होता वहाँ सभी के लिए समानरूप से साधन जुटाए जाते हैं, वहाँ सेवा जाति,धर्म,गरीब या अमीर देखकर नहीं की जाती बल्कि यथासंभव भूखे के लिए भोजन, नंगे के लिए वस्त्र, रोगी के लिए दवाईयां सेवा भाव से उपलब्ध करी जाती हैं क्योकि यहाँ साधन ही साध्य है सेवा सवयं ही साध्य है वहां किसी और साध्य की जरूत नही होती |" गांधी जी पत्रकारिता को दर्पण मानते थे जिसमें जनसेवा की विविध छवियो और रंग रेखाओं को स्पष्टतया उभरते हुए देखा जा सकता है | इसी भरोसे उन्होंने - 5-9-1920 आज के सम्पादकीय में लिखा था ''भारत के गौरव की वृद्धि और उसकी राजनीतिक उन्नति 'आज' का विशेष लक्ष्य होगा | भारत का राजनीतिक आकाश इस समय घनघोर घटाओं से आच्छादित है हम किधर जा रहे है, इसका पता नहीं लग रहा है--- इसी अवस्था में हमको यह आशा है की प्रतिदिन की समस्यायों को हमारा पत्र स्पष्ट रूप से दर्शाएगा और उन सबको आगे चलने का मार्ग दिखाएगा, वे आज सशंक हो रहे हैं और पथ प्रदर्शक खोज रहे हैं'|"

भारतीय राजनीति और सामाजिक जनमानस के आकाश में तो गांधी जी का बोलबाला ऐसा हो गया की वह जिधर जाते जनसमूह उनके पीछे दौड़ पड़ता,| उनके लिए लिखी गयी ये पंक्तियाँ प्रमाण हैं ' चल पड़े जधर दो पग, सब उस ही ओर चले|' पत्रकार लुई फिशर ने उनके बारे में लिखा है –' गांधी जी के लिए राजनीति कोई भारी चीज नहीं है और मूंगफली कोई मामूली चीज नहीं | एक लेख में गांधी भारत के लिए कैसी आजादी चाहिए इसकी व्याख्या करते थे और दूसरे में मिठाई बनाने के लिए दी जाने वाले राशन में कमी करने की मांग करते थे| तीसरे में अपराध और अपराधियों की समस्या पर विचार करते और चौथे में यह आशा प्रकट करते की स्वतंत्र भारत में सेनाएं रखने के बारे में नियंत्रण से काम लिया जाएगा| पांचवे में वे यह फैसला करते हैं कि ' झूठ बोलना किसी भी अवस्था में उचित नहीं हो सकता और सत्य बोलने में किसी अपवाद की स्वीक्रति की गुंजायश नही'|" इतने विशाल चिंतन वाले व्यक्ति के सामने क्या कोई चिंता शेष रही होगी निश्चित ही केवल स्वराज उनकी चिता नहीं था बल्कि उससे बड़ी चिता उनके लिए *सर्वोदय' की थी| सर्वोदय जिसका साधारण अर्थ जाने तो जिसमे सभी के उदय की चिंता थी,और यह गांधी जी के लिए सर्वोदय स्वतंत्रता प्राप्त करने जितना ही महत्वपूर्ण था | उनके लिए पूर्ण स्वाधीनता का मतलब हर एक व्यक्ति की सम्पन्नता और संतुष्टि

से था | सर्वोदय की यह भावना गांधी जी के चिंतन में भारतीय दर्शन की' ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'' से आयी होगी जिसमें '' वसुधैव कुटुम्बकम की भावना भी रही होगी | निश्चित ही गांधी जी जिस राम राज्य की कल्पना की वहां सभी का सुखी और साधन सम्पन्न होना जरुरी था अन्यथा ' जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ' का दुख उन्हें चैन से जीने नहीं देगा | इसके लिए गांधी जी ने मानव जाति के उत्थान में जो भी आवश्क उपकरण चाहे वह धर्म, राजनीति,यन्त्र, मशीने, कल कारखाने, खेती, स्वास्थ्य, स्वछता, महिला, अछूतोधर, उद्योग धन्धे, भाषा, साहित्य और संस्क्रति सभी विषयों पर विवेक पूर्वक विचार करने की आवश्यकता को समझकर निरंतर इन विषयों पर लिखते रहे |

गांधी जी के लिए सर्वोदय पत्रकारिता का उद्देश्य भी यही था | मनुष्य के अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए अपने अधिकार के लिए लड़ाई लड़ें | सर्वोदय पत्रकारिता के विषय में यहाँ डॉ वेद प्रताप वैदिक के विचार उल्लेखनीय हैं --- संक्षेप में सारी पत्रकारिता का उद्देश्य यही है कि कर्तव्यों को पूरा करते हुए निर्भय होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ना,हर व्यक्ति और समाज का कर्तव्य है इसा उद्देश्य के लिए लड़ते हुए सदा इस बात का ध्यान रखा जाय की हम जिससे संघर्ष कर रहे हैं, वह किसी भी कारण से क्यों न हो हमारे भाग्य के साथ जुड़ा हुआ है ; अर्थात हमारा कर्तव्य सहज प्राप्त होना चाहिए हम उससे लड़ते हुए खुद ऊपर उठें और उसे भी ऊपर उठाएं | इस तरह दोनों पक्ष एक दूसरे से आत्मीयाता पूर्वक मतभेदों के बाबजूद सीखने की इच्छा रखें, परिस्थितियों को बदलने की इच्छा रखें इसा प्रक्रिया में जो परिणाम निकले वह उन दो पक्षों का ही नहीं, सारे संसार का हित साधने वाला हो |''' गांधी जी जानते थे यह विचार तभी पल्लवित हो सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति अपने में संतुष्ट हो | यह संतोष उस राष्ट्र की समाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक उन्नति और मजबूती पर निर्भर करता है, यह बात भी गाँधी जी अच्छी तरह समझते थे | इसके लिए समाज में भाषा और शिक्षा को अनदेखा नही किया जा सकता | गांधी जी को जब जब सुअवसर मिला उन्होंने पत्रकारिता में इन सभी विषयों पर भी गहराई से चिन्तन किया गया | और समाज को यही समझाया कि सभी धर्म एक दूसरे से जुड़े हुए है एक को दूसरे से काटकर हम मनुष्य होने का दंभ नहीं भर सकते हैं - * हरिजन में 24.12.1938 को लिखा मैं जब तक सम्पूर्ण मानवता के साथ अपना तारतम्य स्थापित कर लूं तब तक यह नहीं कह सकता की मै धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा हूँ ; ओर यह मैं यह तब तक नहीं कर सकता जब तक की राजनीति मैं भाग न लूं – आप सामाजिक, राजनीतिक और शुद्ध धार्मिक कार्यों को अलग – अलग चौखटों में नहीं बाँध सकते | मै मानव क्रिया के अतिरिक्त और कोई धर्म नहीं जानता ''|

गांधी जी पत्रकारिता में जिन नियमों को लेकर चले थे उनका उनहोंने अंत तक कड़ाई से पालन किया | सबसे पहले पत्रकारिता उनके लिए कभी भी धन कमाने या मनोरंजन का साधन नहीं थी | वह पत्रकारिता में विज्ञापन लेने के सदा विरोधी रहे भले ही धन के अभाव में पत्र निकलना बंद हो जाए यह उन्हें स्वीकार था | इसके साथ साथ उनका आत्म सयंम पर बहुत जोर था | उनका माना था हम जो भी कहें बहुत सोच विचार कर संयमित ढंग से आपनी बात कहें | पत्रकारिता उनके लिए मात्र प्रचार का माध्यम नहीं थी बल्कि सबके हित और कल्याण का साधन थी | उन्होंने पत्रकारिता को कभी व्यवसाय नहीं माना बल्कि वह यही कारण था की पत्रकारिता उनके लिए सेवा कार्य थी | गांधी जी बिना सबूत खबर फैलाना अनुचित मानते थे | इसके साथ ही गांधीजी अखबारों की निरंकुशता पर अंकुश रखने को

अनिवार्य मानते थे | दक्षिण अफ्रीका के अपने अख़बारी दिनों को याद करते हुए महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है *'समाचार-पत्र सेवाभाव से ही चलाने चाहिए. समाचार-पत्र एक जबर्दस्त शक्ति है; लेकिन जिस प्रकार निरंकुश पानी का प्रवाह गांव के गांव डुबो देता है और फसल को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार निरंकुश कलम का प्रवाह भी नाश की सृष्टि करता है. लेकिन यदि ऐसा अंकुश बाहर से आता है, तो वह निरंकुशता से भी अधिक विषैला सिद्ध होता है. अंकुश अंदर का ही लाभदायक हो सकता है|"

गांधी जी की 'सर्वोदय पत्रकारिता ' को सम्पन्न करने का कार्य गांधी जी के समय के अनुयायी काका साहब कालेलकर और दादा धर्माधिकारी के सम्पादन में 1938 में सेवाश्रम आश्रम से 'सर्वोदय' निकला| इस पत्रिका में अधिकतर गांधी जी के विचार सहज भाषा में प्रकाशित होते थे |इस पत्रिका में अन्य भारतीय भाषाओं के सर्वोदय विचारकों के लेख भी प्रकाशित होते थे] इसमें विनोवा भावे का योगदान भी रहता था | गांधीजी जी का यह कथन ' मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है'| उनके अनुयायियों ने उनके इस कथन का अक्षरश: पालन किया | कहना न होगा कि गांधी जी के संसार से जाने के बाद उनके अनुयायियों ने जो राजनीति में गहरे भी नहीं थे सदैव गांधी जी विचारों को रचनात्मक आकार देने में लगे रहते थे | सर्वोदय विचारों की एक महत्वपूर्ण पत्रिका 'ग्रामोद्योग' भी गांधी जी के सामने निकलनी प्रारम्भ हो गयी थी जो 1948 में बंद हो गयी थी |

गांधी जी की मृत्यु के बाद उनके विचारों को साकार करने के लिए 1949 में फिर से सर्वोदय निकला |इस पत्र के परिणाम स्वरूप पूरे देश में गांधीजी के रचनात्मक कार्यो की हलचल मचने लगी | सेवाश्रम से ' खादी जगत' तो निकलता ही था अब वहीं से गांधी जी की कल्पना की शिक्षा का प्रसार सार करने वाला पत्र ' नयी तालीम' भी निकलना शुरू हो गया |

इसके साथ ही वर्धा से सर्वोदय विचारों की त्रेमासिक ' महिलाश्रम' निकलने लगी इसके बारे में. डॉ वेद प्रताप वैदिक ने लिखा है ' महिलाश्रम पत्रिका कहने को तो स्त्री शिक्षा से सम्बद्ध वर्धा की प्रसिद्ध संस्था महिलाश्रम की प्रमुख पत्रिका थी | किन्तु बीच में सर्वोदय मासिक के बंद हो जाने पर इसका प्रकाशन अनिवार्य माना गया यह पत्रिका इसीलिए मुख्य रूप से समूचे सर्वोदय विचार की पत्रिका बनी''

गांधी जी की मृत्यु के बाद सेवाग्राम और सर्वोदय के सभी कार्यकर्ताओं और विचारको का सम्मलेन हुआ,जिसमे तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद और नेहरू जी ने भी भाग लिया | उसमें यह तय किया गया इसा समय सर्वोदय विचारों की देश में सबसे अधिक आवश्यकता है | उस सम्मलेन में ' सर्व सेवा संघ' की स्थापना हुई और सर्वोदय विचारों के प्रसार के लिए कई छोटी बड़ी पत्रिकाएँ निकली| नेहरू जी के सुझाव पर विनोवा जी उस समय के भूमि आन्दोलन के कारण फ़ैली साम्प्रदायिक हिसा रोकने के लिए राजस्थान से दिल्ली पैदल यात्रा पर निकल पड़े उस यात्रा में हैदराबाद से लोटते हुए पिछड़े भूमिहीनों के हिसात्मक आन्दोलन को रोकने के लिए गांधी जी की तरह उनहोंने जन सभाएं की ओर प्रेमपूर्वक ढंग से लोगों को समझाया |जिसके परिणाम सवरूप लोगो ने गरीबों को अपनी भूमि देने की घोषणा की और यही से भूदान गंगा का झरना बह निकला| इसी की साथ- साथ सर्वोदय विचारों की सस्थाओं और व्यक्तियों ने पत्रिकाए निकलना आरम्भ कर दिया | उसी समय 'सर्व सेवा संघ'से निकलने वाली पत्रिका ' भूदान यज्ञ' ने पूरी शक्ति लगाकर 'भूदान' के विचार को तेजी से फैलाया | इस पत्रिका में राममूर्ति, निर्मला देशपांडे, दादा धर्माधिकारी,काशीराम, सुरेशराम भाई जैसे गांधीवादी विचारकों ने भरपूर सहयोग दिया, इतना

ही नहीं इसी पत्रिका ने आचार्य राममूर्ति, नारायण देसाई, प्रभाष जोशी, अनुपम मिश्र, और कुमार प्रशांत जेसे सदी के गांधीवादी पत्रकार हिन्दी पत्रकारिता के लिए तैयार किए| इसी समय से ही ' साहित्य मंडल ' ने भी ' जीवन साहित्य' नाम से मासिक पत्र निकाला जो गांधी के सर्वोदय विचारों को प्रकाशित कर रहा था |

गांधी जी के सर्वोदय विचारों के दफ्तर वर्धा से दिल्ली आने पर सर्वोदय विचारों की पत्रिकाए ' हरिजन सेवा,' मद्य निषेध', और भारत सेवा अब दिल्ली से निकलने लगीं| कुछ पत्र वर्धा से निकलते रहे जिनमें प्रमुख पत्र 'कुष्ठ पत्रिका', 'राष्ट्र भारती और 'मंगल प्रभात' तथा 'नयी तालीम',थे | 'हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' के वर्धा से दिल्ली आ जाने पर 'मंगल प्रभात' दिल्ली से छपने लगा था |जाकिर हुसैन और मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसे राजनीतिक चिनतक गांधी जी के प्रभाव के कारण इस पत्र नियमित रूप से लिखते थे |

इस तरह हम कह सकते है जिन पत्र पत्रिकाओं ने गांधी जी की सर्वोदय पत्रकारिता को सम्पन्न बनाया उनकी संख्या कम नहीं थी गांधी जी के समय में ओर उनके बाद भी हिन्दी प्रदेशों से बड़ी संख्या सर्वोदय विचारों के पत्र – पत्रिकाए देश भर में निकलते रहे | इनमे खादी जगत, कस्तूरबा दर्शन, जीवन साहित्य, वन्य जाती, हरिजन सेवा मध्यप्रदेश से निकलनेवाला 'शताब्दी सन्देश', जयपुर से 'ग्रामराज', 'गांधी मार्ग' जैसे कई विचार प्रधान पत्र लम्बे समय तक हिन्दी अंग्रेजी दोनों भाषाओं में निकलते रहे| कहना न होगा इन पत्रों ने अनेक निर्बलों को जीवन दान दिया और बहुतों को विनम्रत भी सिखाई' |

सर्वोदय पत्रिकारिता की इस श्रंखला में विनोबा जी के ब्रह्मविद्या मंदिर से निकलने वाली मासिक पत्रिका ' मैत्री' को नहीं भूल सकते, यह पत्रिका 12 अक्टूबर 1963 में पहली बार प्रकाशित हुई यह कहना अतिश्योक्ति न होगी यह अकेली पत्रिका 'सर्वोदय पत्रकारिता ' का समूचा इतिहास कहती है|

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी के प्रमुख समाचार पत्र और पत्रिकाएँ – सं ; अच्युतानंद मिश्र
2. हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम ; डॉ वैद प्रताप वैदिक
3. महात्मा गांधी की पत्रकारिता ; डॉ अर्जुन तिवारी
4. सत्य के मेरे प्रयोग – ; महात्मा गाँधी
5. हिन्दी पत्रकारिता का व्रहद इतिहास : डॉ अर्जुन तिवारी
6. सत्याग्रह ; महात्मा गांधी
7. पत्रकारिता और उसके विभिन्न स्वरूप ; ओ. पी. शर्मा
8. डॉ ईश्वरी प्रसाद ; भारत का इतिहास
9. जवाहर लाल नेहरू : हिन्दुस्तान की कहानी